राष्ट्रीय हिन्दी मेल, भोपाल
1 SEP 2010

जीवन ज्योति; एक नया दृष्टिकोण

गैस पीड़ित विधवाओं के दर्द से मुखरित हुई शिवराज की संवेदना

डॉ. स्वाति तिवारी

अपनी बात इस बार एक प्रश्न के साथ शुरू करती हूँ। प्रश्न ये हैं कि जब भोपाल गैस त्रासदी हुई थी तो हजारों लोग काल के ग्रास बने थे। क्या स्त्री, क्या पुरूष, क्या बच्चे, जीवजन्तु, पेड-पौधे सभी मरे थे। पुरूषों के मरने पर उनकी बेवा स्त्रियों के लिए एक कालोनी बनी ''विधवा कालोनी'' पर जो स्त्रियाँ मर गयी थी उनके पतियों के लिए किसी ने विधूर कालोनी क्यों नहीं बनाई ? शायद इसीलिए कि पुरूष तो पुन: घर बसा ही लेगा। इसके पीछे सामाजिक विश्लेषक की तरह विचार करें तो स्पष्ट होता है स्त्रियों के लिए शैशव काल से लेकर वृद्धावस्था तक निरन्तर ऐसा वातावरण तैयार किया जाता है कि नारी में हीनता ग्रंथी और पुरूष में श्रेष्ठता ग्रंथी का विकास होने लगता है। इस भेदभाव में स्त्रियों के सामाजिकरण की प्रक्रिया ही गलत हो जाती हैं। इस प्रक्रिया में मानव मनोविज्ञान के बजाय नारी मनोविज्ञान और पुरूष मनोविज्ञान की अलग-अलग सृष्ठि होने लगती हैं। उसी का परिणाम किसी कालोनी का विधवा कालोनी नाम होना सामने आता है। स्त्रियों के सामाजिकरण की ऐसी गलत प्रक्रियाएं ही उसे दोयम दर्जा देती है। पर, बदलाव आया, भले ही 25 साल बाद आया बहरहाल समाज में ऐसे क्रांतिकारी बदलाव लाने के लिए राजाराम मोहन राय जैसी सोच और दृष्टि चाहिए होती है। हाल ही में एक बदलाव फिर चर्चा में आया जिसका श्रेय मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान को जाता है जिन्होंने कहा कि गैस पीड़ितों की विधवा कालोनी अब जीवन ज्योति कालोनी के नाम से जानी जाएगी। आश्चर्यचकित हूँ जिस बात पर हमारे मुख्यमंत्री षिवराज सिंह चौहान का ध्यान गया उस बात पर अब तक 25 सालों में किसी का ध्यान क्यों नहीं गया? क्या अपने घर में कोई अपनी बहन-बेटियों के लिए किसी कमरे या घर पर ऐसी नेमप्लेट लगाता है? नहीं ना? तो पूरी कालोनी अब तक इसी नाम से पहचानी जाती रही है। सब चुप थे किसी ने अब तक पहल नहीं की इससे पहले? खबर पढ़ने के बाद से मन में यह प्रश्न बार बार उठ रहा है यह कैसा नाम था यह कैसी कालोनी? कालोनी न हुई कोई मठाधीश द्वारा बनवाया आश्रम हो जैसे? -रक्षाबंधन के पर्व पर अगर कोई भाई ऐसा उपहार दे जो आँखों के खारे पानी को सोख ले, जो जीवन भर के दर्द - पीड़ा के अहसास से मुक्ति दे--तो दिल से उसके लिए सदाएँ और दुआएँ ही तो निकलती हैं। विधवा बहनों पर पीड़ा के अहसास का पक्का ठप्पा लगाता शब्द ''विधवा कालोनी'' सामाजिक उपेक्षा, सामाजिक उत्पीड़न और दया, पीड़ा के पर्यावरण का परिचायक था पर बधाई के पात्र हैं षिवराज जिन्होंने सामाजिक उत्पीड़न से मुक्त करने के लिए एक सकारात्मक जीवन आस भरा नाम दिया जीवन-ज्योति।

''जीवन-ज्योति'' शब्द उस कालोनी पर सटीक बैठता है क्योंकि वहाँ जो लोग रह रहे हैं वे लोग वे हैं जो मृत्यु के ताण्डव (भोपाल गैस त्रासदी) में बचकर आए थे। मृत्यु के उस प्रलयकाल में भी उन्हीं के रूप में जीवन-ज्योत बची रही थी। उनका बचना जीवन-मृत्यु के महासंग्राम में जीवन की मृत्यु पर विजय का प्रतीक है। उनके लिए बसाई गई कालोनी पर विधवा कालोनी शब्द कुछ इस तरह लगता है जैसे सूनी कलाई वाले हाथ, सूनी पड़ी माँग, जीवन में आई स्थाई रिक्तता के साथ जीवन के सूनेपन को दर्षाते हैं। सफेद साड़ी जिस तरह जीवन के निर्वासन का प्रतीक होती है, उसी तरह प्रश्न उठता है कि वे औरतें जिन पर आफतों का पहाड़ टूट पड़ा था, उन्हें सफेद साड़ी की तरह अलग विधवा कालोनी देकर समाज क्या संदेष देना चाहता है? कहीं यह हमारी उसी पुरानी परम्परावादी ढकोसले वाली सामाजिक सामन्ती मानसिकता की देन तो नहीं थी जिसने बनारस और हरिद्वार में विधवा आश्रमों का निर्माण किया था? क्या ''विधवा कालोनी'' ऐसा नहीं लगता कि गैस पीड़ित विधवाएँ शेष उम्र अपने आप को सारी दुनिया से अभागन रूप में अलग कर, केवल जीवन के इस हादसे से ही जुड़ी रहे? यह कैसी हमारी सामाजिक व्यवस्था हैं? हम विधवा को इस तरह क्यों बना देते हैं? समाज के सामने उन महिलाओं को विधवा और असुरक्षित होने का एक सर्टीफिकेट क्यों जड़ देते हैं उसके विधवा रूप, विधवा कालोनी, विधवा पुनर्वास जैसे शब्दों से यह अनचाही परम्परा वस्त्रों या स्वरूप या कालोनी किसी भी रूप में पुरूषों पर तो लागू नहीं हुई? पर मुख्यमंत्री षिवराज सिंह की संवेदनषीलता स्वत: यहाँ मुखरित हुई है। उन्होंने ना केवल कालोनी का नाम बदल कर उन परिवारों की आने वाली पीढ़ियों को पीड़ा, त्रासदी और अनकहे दर्द के अहसास से मुक्ति दी है बल्कि उन निर्विकार होती आँखों को सपने और चेहरों को रौनक दी है। ये वे चेहरे हैं जो नियति के चक्र में यादों के कब्रिस्तान में उठते-बैठते हैं। उन्हें सपनों के कब्रिस्तान से बाहर लाने के लिए मुख्यमंत्री ने 15 करोड़ के उपहार दिए हैं। मंगलवार का दिन विधवा कालोनी के निवासियों के लिए खुषहाली लेकर आया, अवसर था रक्षाबंधन का। भाई के रूप में मुख्यमंत्री स्वयं वहाँ पहुँचे थे रक्षासूत्र बँधवाने। वहाँ उन्होंने गैस पीड़ित विधवा बहनों से राखी बँधवाई और उन्हें पाँच सौ रूपए प्रति माह आजीवन पैन्षन दी जाएगी, यह घोषणा की। कालोनी की आँगनवाड़ी से लेकर हाय स्कूल तक का उद्धार करने के लिए कहा एवँ उन बहनों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए रोजगार प्रषिक्षण की विषेष योजना बनाने के निर्देष भी दिए। उन्होंने बहनों को कहा भारतीय संस्कृति में कच्ची डोर का यह रिष्ता सबसे पक्का होता है। वे बहनों के द्वारा प्यार और विश्वास से बाँधी राखी को जीवनभर निभाएंगे। निराषा भरे जीवन में बहनों को आशा की किरणें और जीवन की उजास देने वाले भाई षिवराज यूनियन कार्बाइड की उस जहरीली हवाओं की पीड़ा में ताजी हवाएँ लेकर गए तो बहनें उन्हें दुआएँ और सदाएँ तो देंगी ही।

भोपाल शहर में जाने कितने ऐसे क्षेत्र हैं जाने कितने लोग जो उस जहरीली हवा के साए में सिमट गए थे जो अब भी उस खौफ से कंपकंपाते हैं क्योंकि-

यहीं मुकद्दस हथेलियों से गिरी है मेंहदी
दियों की टूटी हुई लवें ज़ंग खा गयी हैं
यहीं पे माथों की रौषनी जलके बुझ गयी है
सपाट चेहरों के ख़ाली पन्ने खुले हुए हैं
हुरूफ़ आँखों के मिट चुके हैं
यहीं कहीं ज़िन्दगी के मानी गिरे हैं
और गिरके खो गये हैं।

आज वहीं, उसी जगह कोई भाई अपनी बहनों के भावी जीवन में सुनहरे सपनों की ज्योत जलाने पहुँचा तो सपाट हुए उन चेहरों पर भावनाओं को बहते सबने देखा।

डॉ. स्वाति तिवारी
ई-एन 1/9, चार इमली,
भोपाल-462016
(लेखिका जानी मानी साहित्यकार हैं)
संपर्क- 94240-11334